जोई गौन्ज़ालस

एक बेहतरीन अमरीकी

लेखन: टोनी रोबल्स्

चित्र: जिम प्रायर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जोई गौन्ज़ालस

एक बेहतरीन अमरीकी

लेखन: टोनी रोबल्स्
चित्र: जिम प्रायर
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आमुख

यह क़िताब मैंने उन अमरीकी बच्चों के लिए लिखी है जो हिस्पानी मूल के लोगों और अफ्रीकी गुलामों के वंशज हैं। मुझे उम्मीद है कि यह क़िताब उन्हें खुद में अपने पूर्वजों की ताकत और साहस को तलाशने में मदद करेगी।

पुस्तक के चित्र बनाने को सहमत होने के लिए जिमि प्रायर का शुक्रिया। उन्होंने इसके लिए एक्रलिक व तैल रंगों की अपनी सूची में खास तौर से जल रंग भी जोड़े। बफलो सोल्जर्स का उल्लेख पुस्तक में जोड़ने के उनके सुझाव के लिए विशेष आभार। इसने कहानी को और मज़बूती दी है।

जोई गौंज़ालस नौ साल का था। वह बड़ा होकर एक बेहतरीन अमरीकी बनना चाहता था। एक दिन जोई अल्ल सुबह जागा और अपनी माँ को उठाने दौड़ा।

"मॉम!" वह चीखा। "उठो, जागो! आज स्कूल का पहला दिन है।" उसकी माँ ने चादर से मुँह निकाला। "सुप्रभात जोई," माँ ने कहा। "आज से तुम्हारी तीसरी कक्षा शुरू होने वाली है, है ना?"

"हाँ मॉम। मैं खूब मेहनत से पढ़ाई करुंगा," उसने कहा। "और किसी दिन एक बेहतरीन अमरीकी बनूंगा!"

उसकी माँ मुस्कुराई। "जोई तुम तो सबसे बेहतरीन अमरीकी बनोगे," माँ बोली।
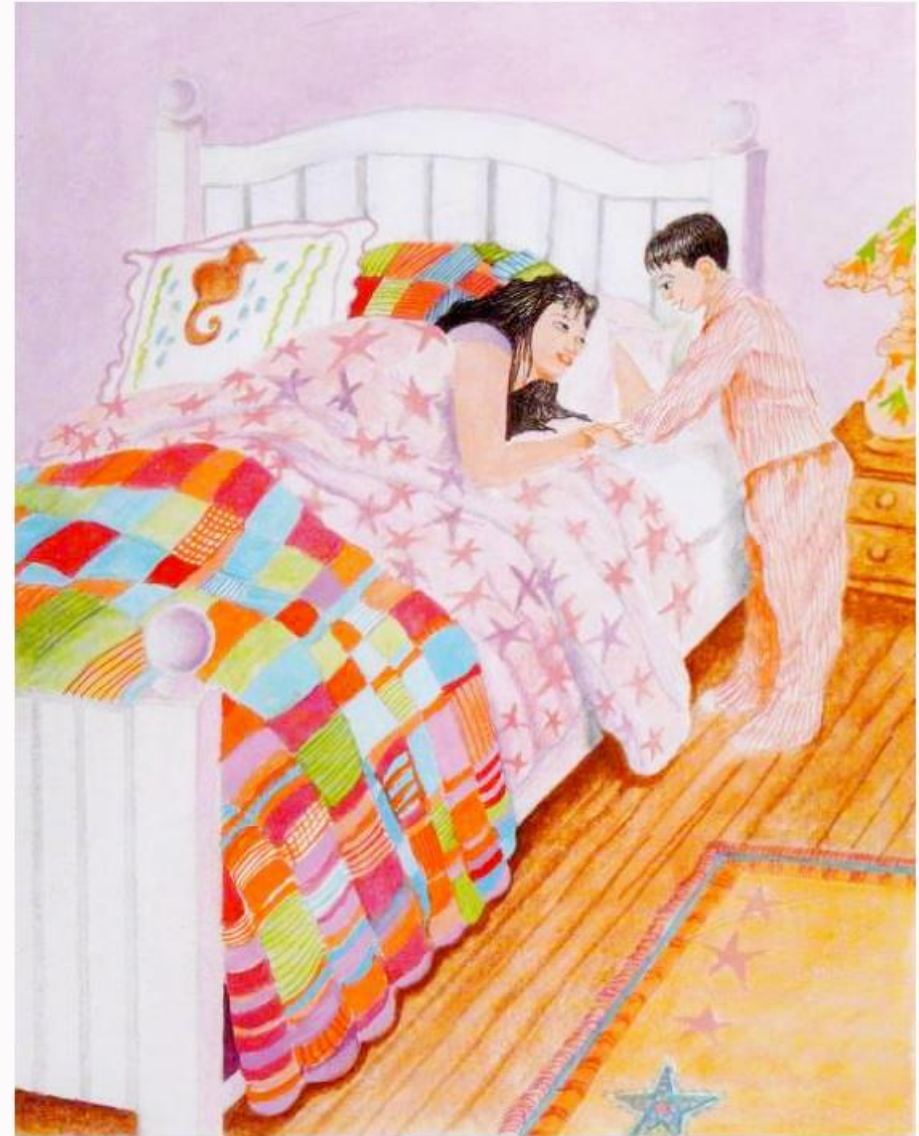
“मैं फ़ौरन, अभी से शुरुआत करने को तैयार हूँ, मॉम,” जोई ने कहा।

“अभी, फ़ौरन?” माँ ने पूछा।

“जी हाँ,” जोई का जवाब था।

माँ बिस्तर से उठीं। “ठीक है,” वे बोलीं। “चलो तुम्हारा नाश्ता बनाते हैं।”

नाश्ता करने के बाद जोई बस स्टॉप की ओर दौड़ा। वहाँ जल्द ही उसके तीनों पक्के दोस्त भी आ पहुँचे।
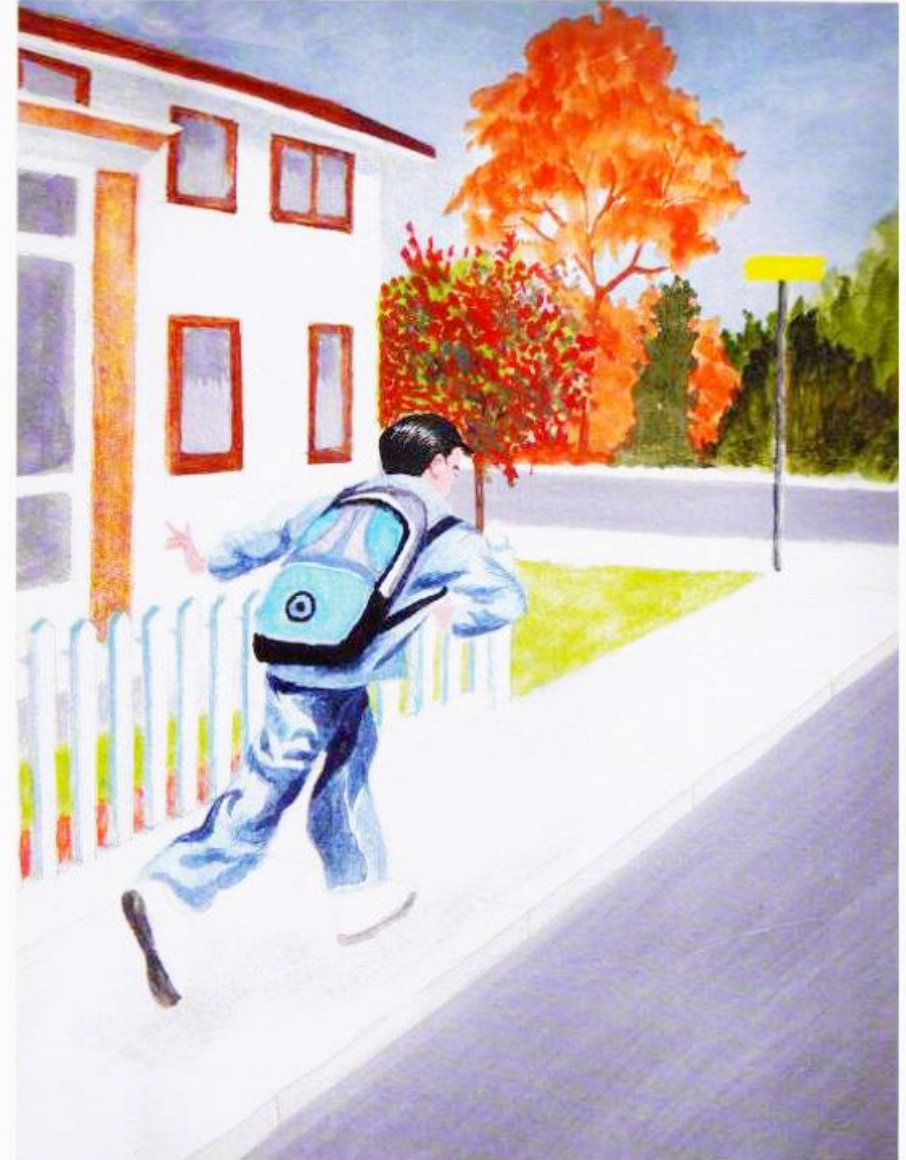
एण्डी सबसे पहले पहुँचा। वह मुहल्ले का सबसे लम्बा लड़का था। उसके बाल हल्के सुनहरे थे और उसकी नीली आँखों पर छाए रहते थे। एण्डी को बास्केटबॉल खेलना पसन्द था। दूसरों के सिर के ऊपर से बॉल फेंकना उसके लिए आसान जो था।

''हलो, जोई,'' एण्डी ने कहा।

''हाय, एण्डी,'' जोई पलट कर बोला।
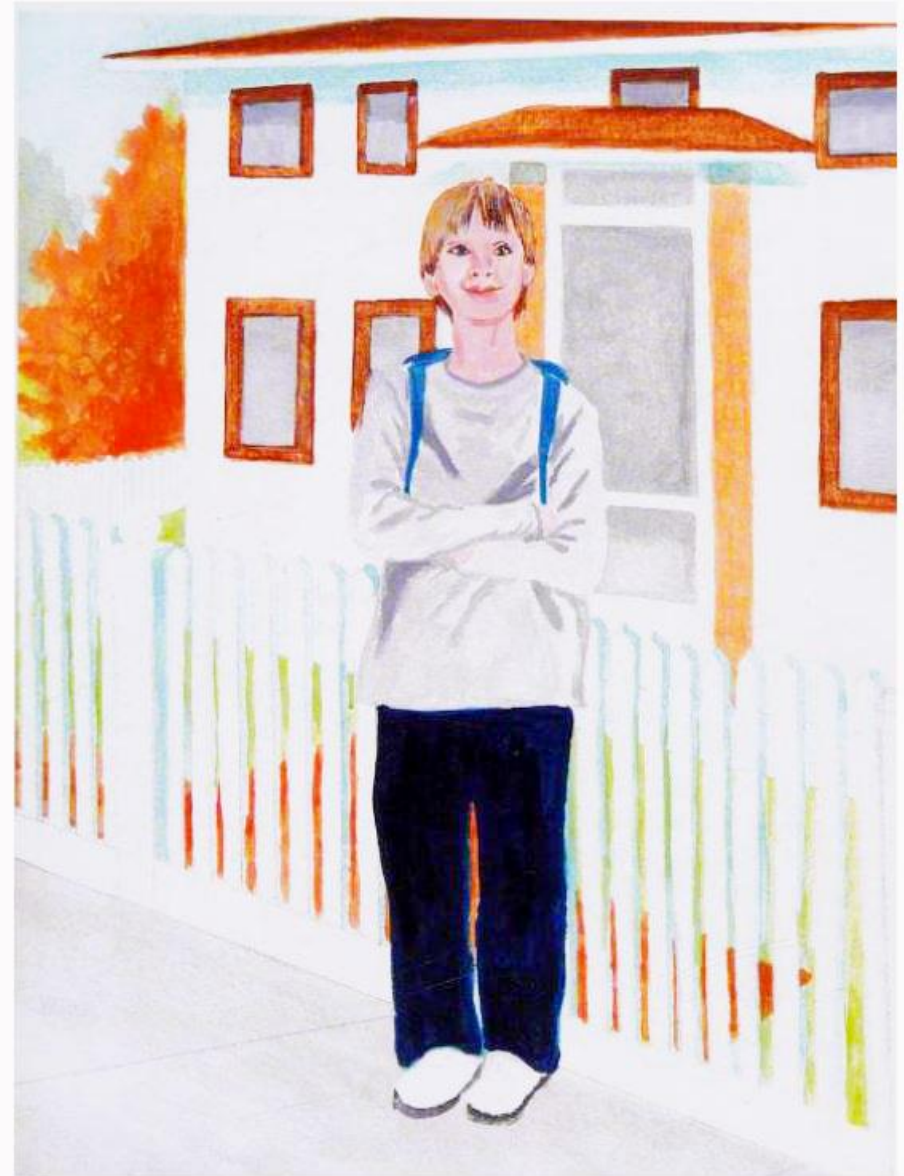
उसके बाद सैण्डी आई। सैण्डी का रंग हल्का भूरा था, चॉकलेट घुले दूध की तरह। वह लगभग एण्डी जितनी ही लम्बी थी। सब जानते थे कि वह एण्डी से भी बेहतर तरीके से बॉल को बास्केट में डाल सकती थी। पर सैण्डी बास्केटबॉल नहीं खेलती थी। उसे बेसबॉल पसन्द था।

''हलो, लड़कों,'' सैण्डी ने कतार में खड़े हो कहा।

''हलो, सैण्डी,'' जोई बोला।

''हाय, सैण्डी,'' एण्डी ने बड़ी-सी मुस्कान के साथ कहा।
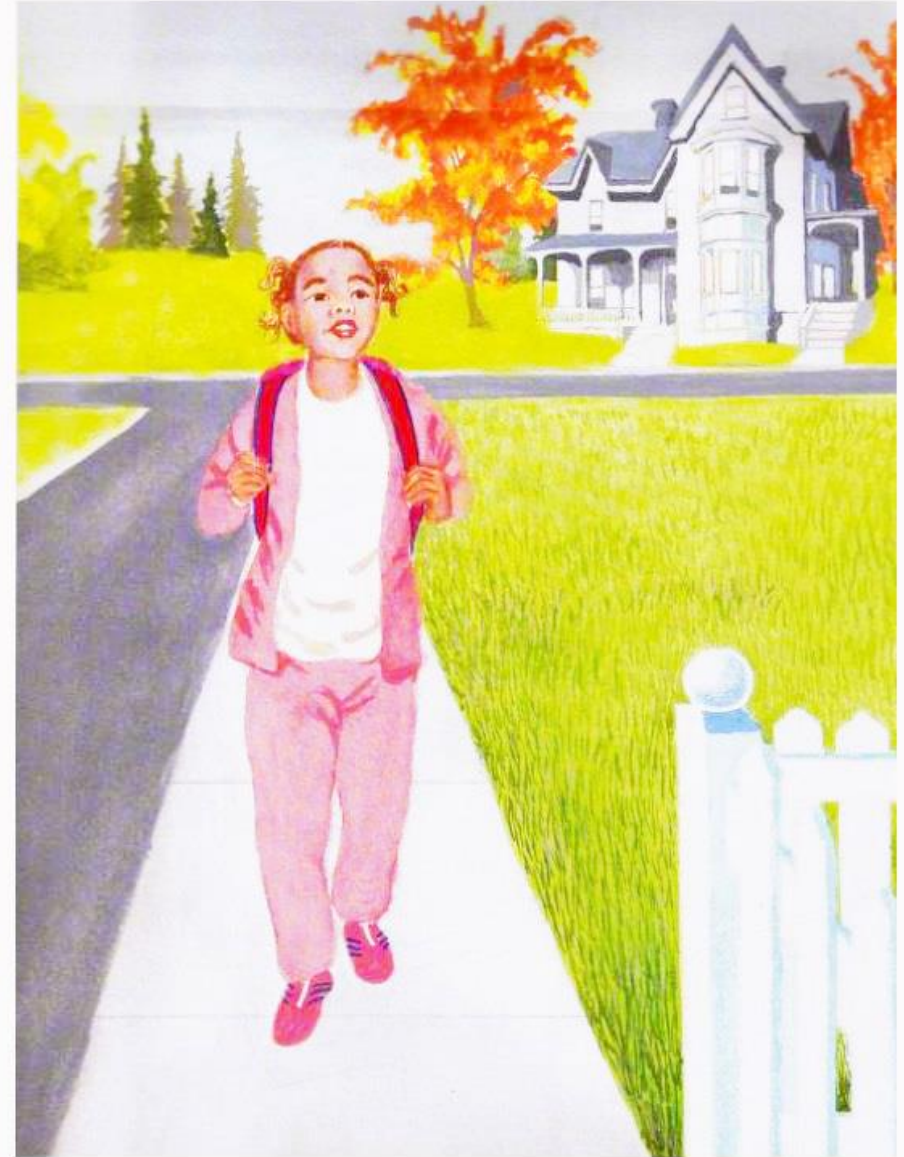
तब लिऑन आया। लिऑन मुहल्ले का सबसे नाटा बच्चा था। वह एण्डी की तरह बास्केटबॉल नहीं खेलता था। ना ही सैण्डी की तरह बेसबॉल। लिऑन को क़िताबें पढ़ना पसन्द था और वह ढ़ेरों भारी-भरकम लफ्ज़ जानता था। उसकी चमड़ी भी सैण्डी की ही तरह भूरी थी, पर कुछ और गहरी, मानो निखालिस चॉकलेट हो।

''गुड मॉर्निंग, टोली,'' लिऑन ने कहा।

''हलो, लिऑन,'' जोई बोला।

''गुड मॉर्निंग, लिऑन,'' सैण्डी ने कहा।

''क्या हाल, लिऑन?'' एण्डी बोला।

जोई को अपने सभी दोस्त अच्छे लगते थे, और वह कुछ-कुछ सबके जैसा था। वह एण्डी की तरह अच्छी बास्केटबॉल खेल सकता था, हालांकि वह उतना लम्बा न था। वह सैण्डी की तरह हमेशा बेसबॉल नहीं खेलता था, पर जब खेलता तो गेंद को जमकर पीट सकता था। उसे लिऑन की तरह तमाम शब्द नहीं आते थे, पर उसे पढ़ना पसन्द था।
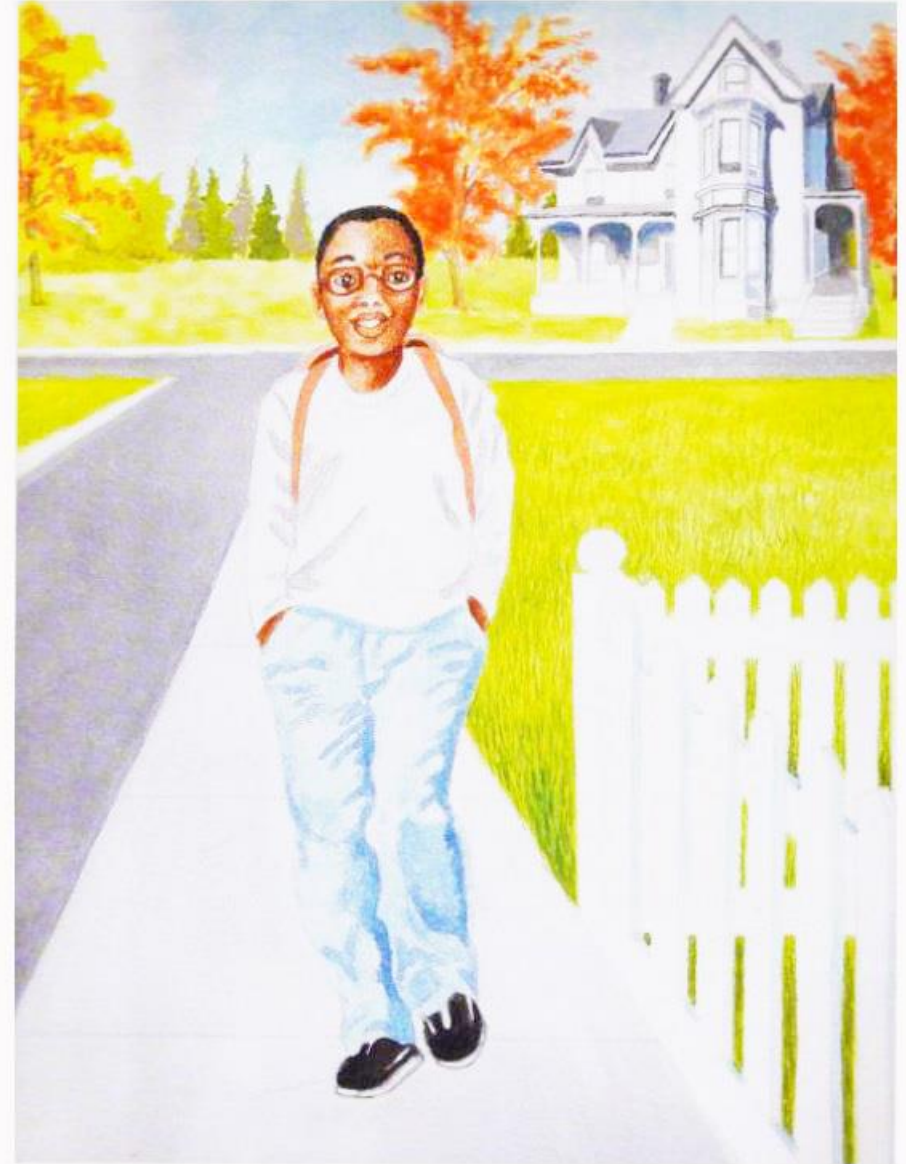
पर कई बातों में जोई अपने दोस्तों जैसा नहीं था। वह हिस्पानी और अंग्रेज़ी, दोनों में बोल सकता था। और फिर इस टोली में वह अकेला था जिसके पिता नहीं थे। उसकी माँ कड़ी मेहनत करती थी, पर उनका घर बड़ा नहीं था। ना ही उनके पास मुहल्ले के दूसरे परिवारों की तरह नई मोटरगाड़ी थी। जोई के दोस्तों के कपड़े उससे बेहतर थे, और उनके पास खिलौने भी ज़्यादा थे।

पर जोई को इस सबसे फ़र्क नहीं पड़ता था। वे सभी एक ही स्कूल में जाते थे और एक ही कक्षा में पढ़ते थे। जोई जानता था कि अगर वह मेहनत से पढ़े और खूब सीख ले तो एक बेहतरीन अमरीकी बनने का सबको समान मौका मिलेगा।

जब जोई और उसके दोस्त स्कूल पहुँचे, वे अपनी नई शिक्षिका मिसेज़ ग्लास से मिले। वे दुबली-पतली थीं और एक ढ़ीली पोशाक और बड़े-से जूते पहने थीं।

''गुड मार्निंग, बच्चों,'' उन्होंने गहरी आवाज़ में कहा। ''मेरा नाम मिसेज़ ग्लास है। तीसरी कक्षा में तुम सबका स्वागत है।''

उन्होंने अपनी लम्बी, हड़ियल उंगली जोई की ओर उठाई। ''मुझे अपना नाम बताओ और अपने बारे में भी कुछ बताओ।''

''मेरा नाम जोई गौंज़ालस है,'' जोई ने कहा। ''और एक दिन मैं एक बेहतरीन अमरीकी बनूँगा।''

शिक्षिका की आँखें कुछ चौड़ी हुईं। ''तो तुम हिस्पानी हो,'' वे बोलीं।

''नहीं मैम,'' जोई ने कहा। ''मैं अमरीकी हूँ।''

शिक्षिका की आँखें सिकुड़ कर कुछ छोटी हुईं, तब फिर से चौड़ी। ''गौंज़ालस हिस्पानी नाम है,'' वे बोलीं।

''नहीं मैम,'' जोई ने साफ किया। ''वह हिस्पानी हुआ करता था, पर अब अमरीकी है।''

मिसेज़ ग्लास की आँखें फिर सिकुडीं, अबकी बार वे छोटी ही बनी रहीं। ''तुम मुझे मिसेज़ ग्लास बुला सकते हो,'' उन्होंने कहा।
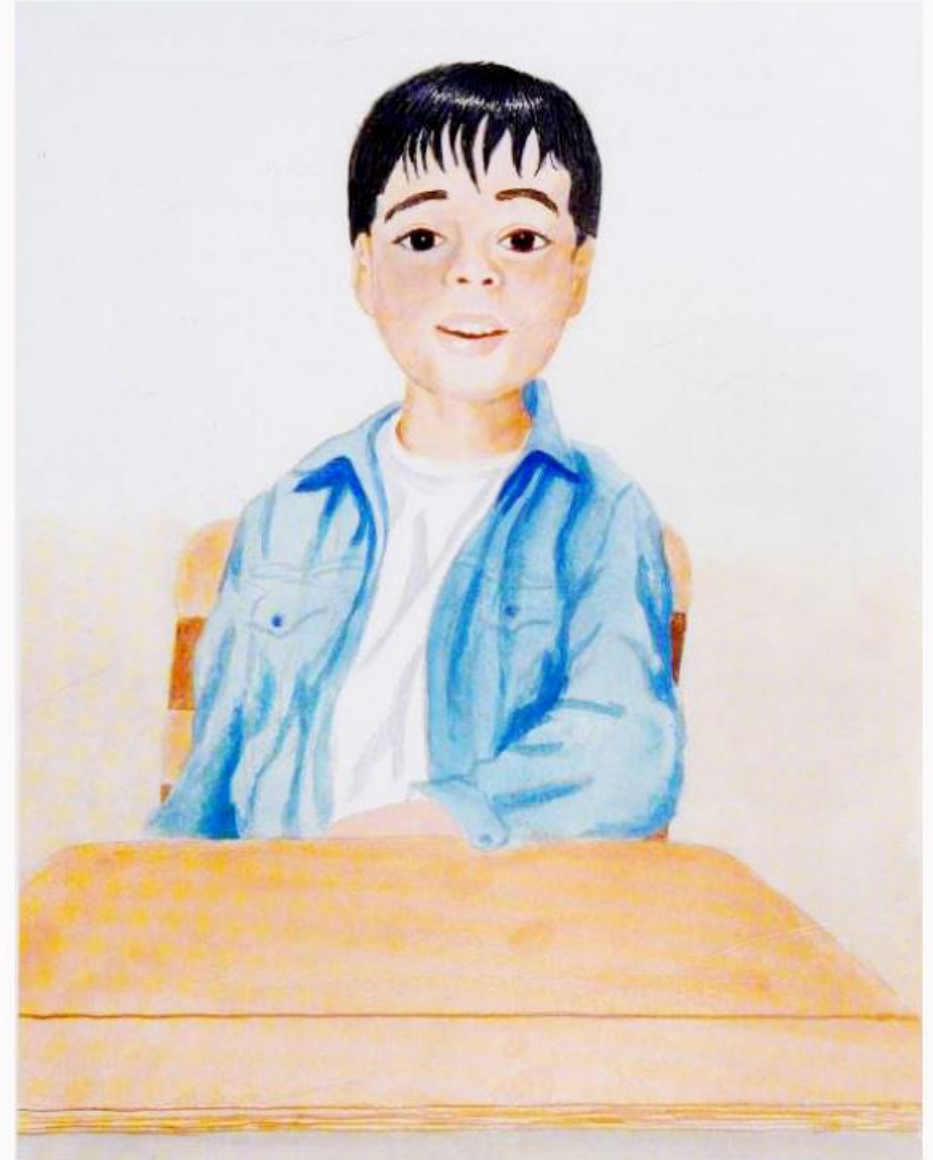
जोई कुछ घबरा-सा गया। उसने कमरे में नज़र दौड़ाई। उसे लगा एण्डी उसकी घबराहट का मज़ा ले रहा है। सैण्डी शिक्षिका को घूर रही है। और लिऑन के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान है।

जोई ने एक गहरी साँस ली। "ठीक है मिसेज़ ग्लास," वह बोला।

"ग्लास अमरीकी नाम है," शिक्षिका ने कहा। "दोनों नामों में फ़र्क है।"

"माफ़ करें," जोई ने कहा। "मुझे पता नहीं था। मेरी माँ गौंज़ालस है और वह अमरीकी है। तो यह कैसे हो सकता है कि मैं अमरीकी नहीं? और अगर मैं अमरीकी हूँ ही नहीं, तो फिर किसी दिन एक बेहतरीन अमरीकी कैसे बनूंगा?"

मिसेज़ ग्लास मुस्कुराईं, पर उनकी मुस्कान इतनी अजीब थी कि जोई बेचैन हो गया। जोई को दिख रहा था कि मिसेज़ ग्लास को उस पर तरस आ रहा था।

"फ़िक्र न करो जोई," वे बोलीं। "हम तुम्हारी मदद करेंगे, ताकि तुम ठीक-ठाक बन सको," वे कुछ अफ़सोस के साथ मुस्कुराईं। "तुम बस थोड़े-से फ़र्क हो।"

जोई की आवाज़ चिंचियाई-सी निकली। "मैं फ़र्क हूँ?" उसने पूछा।

"बेशक तुम फ़र्क हो," मिसेज़ ग्लास ने कहा। "क्या तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें यह बताया नहीं?"

"नहीं मैम," जोई बोल पड़ा। "मेरा मतलब है मिसेज़ ग्लास। घर में बस मेरी माँ और मैं ही हैं।"

मिसेज़ ग्लास कक्षा के बच्चों की ओर मुड़ीं। "तुमने देखा बच्चों," उन्होंने पूछा, "क्या किसीको मालूम है कि जोई क्या है?"

"वह यतीम है?" एण्डी ज़ोर से बोल पड़ा।

"नहीं," मिसेज़ ग्लास ने कहा। "वह यतीम नहीं। पर वह भी अच्छा जवाब था। अगर किसीको मालूम है कि जोई क्या है तो अपना हाथ खड़ा करो।"

लिऑन ने अपने सहपाठियों को देखा, और धीमे से हाथ उठाया।

मिसेज़ ग्लास ने अपनी पतली उंगली से लिऑन की ओर इशारा किया। "बताओ जोई क्या है," उन्होंने पूछा।

"वह अल्पसंख्यक है," लिऑन ने जवाब दिया।

"बहुत अच्छे!" मिसेज़ ग्लास ने शाबासी दी। "सही कहा। वह अल्पसंख्यक है। और हम सब जानते हैं कि अल्पसंख्यक फ़र्क होते हैं, जानते हैं ना?"

"पर मैं कोई फ़र्क महसूस नहीं करता," जोई ने एतराज़ किया।

"ओह, पर तुम हो," मिसेज़ ग्लास बोलीं। "अव्वल तो अल्पसंख्यकों के लिए सीखना ज़्यादा मुश्किल होता है। खासकर तब, जब उनके पिता न हों।"
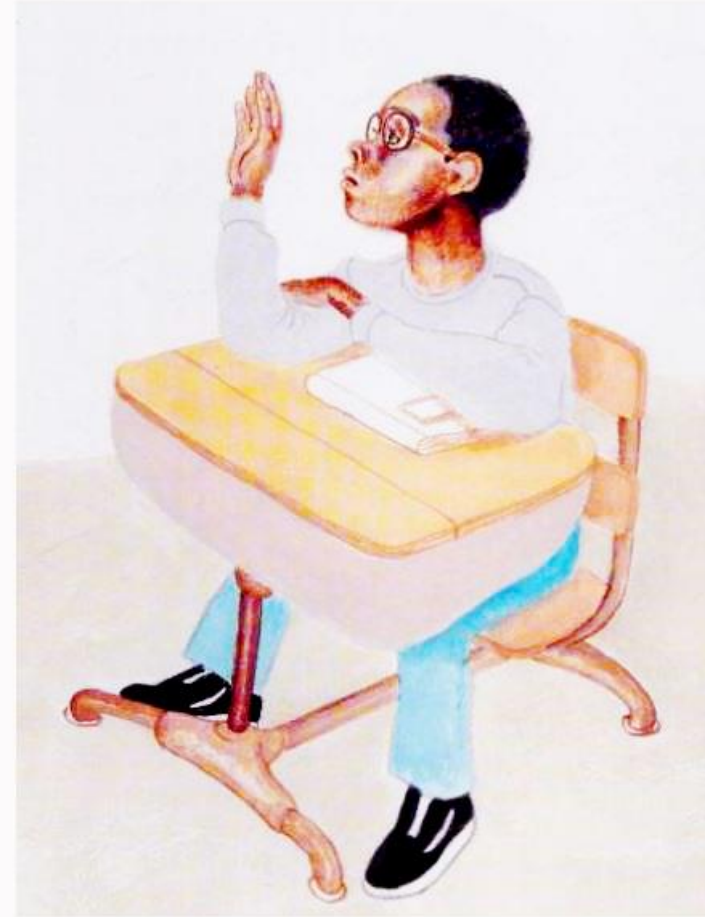
“पर मैं ठीक से सीख रहा हूँ,” जोई ने ज़ोर देकर कहा। “मैं खूब सीखना चाहता हूँ। और एक बेहतरीन अमरीकी बनना चाहता हूँ।”

“फ़िक्र न करो जोई,” मिसेज़ ग्लास तसल्ली देते बोलीं। “अल्पसंख्यकों को आगे बढ़ने में मदद करने के लिए एक खास तरीका है। इसे ‘समर्थतनात्मक कार्रवाई’ (अफरमेटिव एक्शन) कहते हैं। हम जल्द ही इस कक्षा में समर्थनात्मक कार्रवाई के बारे में सब कुछ सीखेंगे। यह एक बेहद ज़रूरी चीज़ है जिसे हम इस स्कूल में करते हैं।
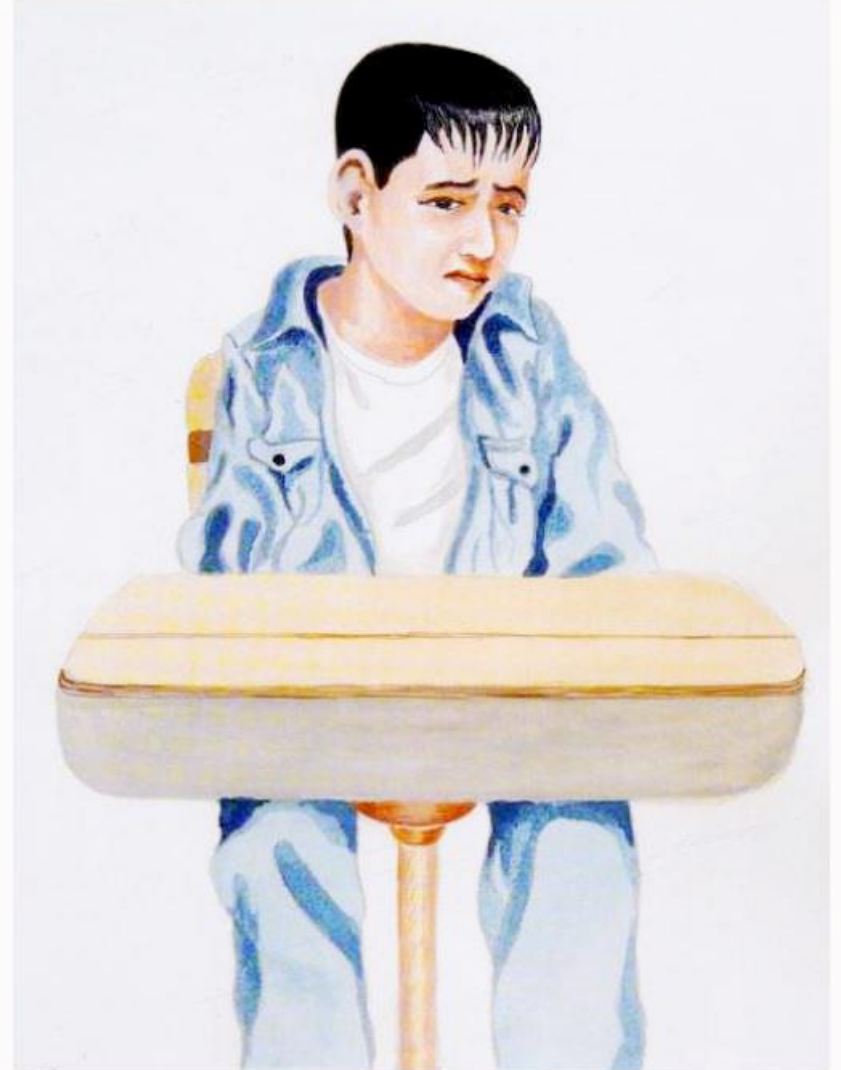
जब तक जोई और उसके दोस्त अपने मुहल्ले में बस से उतरे, जोई को लगने लगा कि उसकी ज़िन्दगी पूरी तरह बदल गई है।

"मेरी माँ ने जो कुछ मुझे बताया, वह सब ग़लत था," वह बोला। "मैं अमरीकी हूँ ही नहीं, मैं तो अल्पसंख्यक हूँ। मैं चाहे जितनी भी कोशिश कर लूँ हमेशा ही अल्पसंख्यक ही रहूँगा। अल्पसंख्यक होना हमेशा-हमेशा के लिए होता है।"

"मुझे खुशी है कि मैं अल्पसंख्यक नहीं हूँ," एण्डी ने कहा।

"अल्पसंख्यक होने में कोई बुराई नहीं है," लिऑन बोला, "मुझे अल्पसंख्यक होना अच्छा लगता है।"

"तुमने मिसेज़ ग्लास को सुना ना?" एण्डी ने पूछा। "अल्पसंख्यक फ़र्क होते हैं। और तुम लोग आसानी से सीख भी नहीं पाते हो।"

लिऑन हंसा। "बेशक सीख सकते हैं। हम भी दूसरों की तरह अच्छे से सीखते हैं। पर अगर सीखने में परेशानी हो तो हमारे लिए समर्थनात्मक कार्रवाई भी तो है। मेरे डैड कहते हैं हमें बस अपना नस्ली पत्ता (रेस कार्ड) चलाना पड़ता है।"
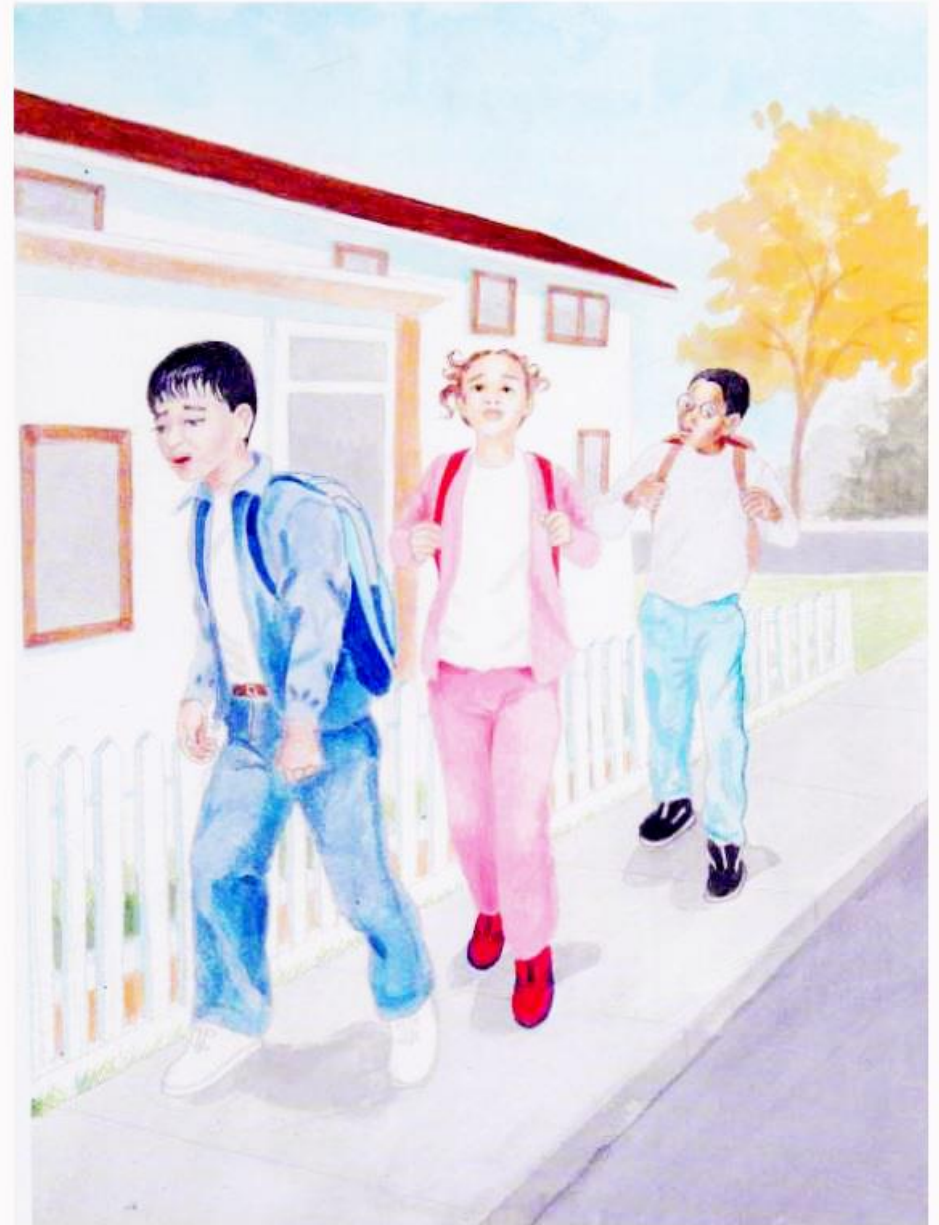
"यह नस्ली पत्ता भला क्या होता है?" एण्डी ने पूछा।

"नस्ली पत्ता?" लिऑन ने जवाब में कहा। "मान लो हम दोनों के पिता एक दौड़ में मुकाबला कर रहे हों। मेरे पिता की चमड़ी काली है, सो वे नस्ली पत्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसा करने पर उन्हें तुम्हारे डैड से कुछ पहले शुरू करने की छूट मिलेगी। इसे ही समर्थनात्मक कार्रवाई कहते हैं।

"उन्हें पहले शुरू करने की छूट मिलेगी?" एण्डी की भौंहों तन चुकी थीं। "यह तो ठीक नहीं है।"

उसने सैण्डी को देखा। "तुम भी तो कुछ भूरी-सी हो, सैण्डी," एण्डी ने कहा। "क्या तुम्हारे डैड के पास भी नस्ली पत्ता है?"

"नहीं," सैण्डी गुस्से से कह उठी। "मेरे डैड का कहना है कि यह बेईमानी होगी।"

"यह सच नहीं है!" लिऑन ने एतराज़ किया। "मेरे डैड कहते हैं कि यही नियम है। और अगर तुम नियम का पालन करते हो तो तुम बेईमानी नहीं कर रहे होते।"

“तुम्हारे डैड बेईमान हैं,” सैण्डी बोल उठी।

लिऑन उसकी ओर मुड़ा, “मैंने अपने डैड को कहते सुना है कि तुम्हारे डैड अंकल टॉम (ऐसा काला व्यक्ति जो गोरों की जी-हज़ूरी करता हो) हैं।”

“अंकल टॉम क्या होता है,” एण्डी ने जानना चाहा।

“मुझे पता नहीं,” लिऑन ने जवाब दिया। “पर लगता है कुछ बहुत ही बुरा होता होगा।”

सैण्डी लिऑन के पास बढ़ आई और उसे गुस्से से देखा। लिऑन उसके सामने बौना-सा लग रहा था। सैण्डी ने लिऑन की छाती पर उंगली चुभाई। “किसीको बुरा-भला कहने के पहले ज़रा सावधान रहना,” उसने धमकाया।

लिऑन ने अपने दोनों हाथ खड़े किए और कुछ कदम पीछे हट गया। “माफ़ करना सैण्डी, नियम मैं नहीं बनाता। ठीक है?”

“यह तो बहुत ही गड़बड़ हो रहा है,” जोई ने एण्डी से कहा। “मिसेज़ ग्लास ने हमें फ़र्क कहा इसके पहले हम खासे ठीक-ठाक थे। पर अब लिऑन और सैण्डी किसी घटिया पत्ते और किसी अंकल टॉम पर लड़ रहे हैं। मुझे कतई अच्छा नहीं लग रहा। मैं घर जा रहा हूँ।”

जब जोई घर में घुसा, माँ ने ग़ौर किया कि कुछ गड़बड़ है।

''क्या बात है जोई?'' माँ ने सवाल किया। ''क्या स्कूल में आज मज़ा नहीं आया?''

जोई ने माँ को देखा और उसे लगा कि उसका तो दिल ही टूट चुका है।

''मॉम!'' वह चीखा। ''तुमने मुझे कभी यह बताया क्यों नहीं कि मैं अल्पसंख्यक हूँ!''

इसके बाद जोई ने माँ को वह सब बताया जो स्कूल में घटा था।

जोई की माँ ने बिना कुछ बोले उसकी पूरी बात सुनी। जब जोई सब बता चुका माँ ने उसे अपनी बाँहों में समेटा और उसे अपनी गोद में बिठा लिया।

“बेटा जोई,” वे बोलीं, “मैंने अमरीकी होने के बारे में तुम्हें जो कुछ बताया था क्या तुम्हें वह याद है?”

“हाँ मॉम,” जोई ने जवाब दिया।

“तो कल स्कूल जाकर तुम्हें अपनी टीचर जी को वह सब बताना चाहिए,” उन्होंने सुझाया।

“पर इससे क्या मैं मुश्किल में नहीं फंस जाऊँगा?” जोई ने जानना चाहा।

जोई की माँ ने उसे ज़ोर से चिपटाया। तब जोई से कहा, “कभी-कभार हम सच बोलने पर परेशानी में फंसते हैं जोई। पर यही तो बहादुर बनने का समय होता है। लोग चाहे कुछ भी कहें या सोचें उसकी परवाह किए बिना हमें सच बोलना चाहिए। यही तो बेहतरीन अमरीकी बनने का असली मतलब होता है।”

जोई रात को जल्दी सोया और चैन से सो पाया। उसका मन अब शान्त था। वह मिसेज़ ग्लास का सामना करने को तैयार था।

अगले दिन कक्षा में जोई ने अपना हाथ खड़ा किया।

मिसेज़ ग्लास ने उसे आँखें सिकोड़ कर देखा। ''हाँ, जोई,'' उन्होंने पूछा।

जोई खड़ा हुआ उसने कक्षा में चारों ओर नज़र दौड़ाई। सब उसकी ओर ताक रहे थे। सैण्डी मुस्कुराई। एण्डी ने कौतुहल से उसे देखा। लिऑन ने आँख मारी। जोई मिसेज़ ग्लास की ओर मुड़ा। सच बोलने का समय आ चुका था।

''मिसेज़ ग्लास,'' उसने बात शुरू की। ''मैं एक अमरीकी हूँ। बहुत समय पहले मेरे पूर...पूर..,'' जोई अब तक इतना घबरा चुका था कि उसे वह शब्द याद ही नहीं आ रहा था। उसने अपने दोस्त लिऑन को देखा, जो बड़े और भारी-भरकम लफ्ज़ जानता था।

''तुम्हारे पूर्वज?'' लिऑन ने जानना चाहा।

“हाँ,” जोई ने कहा। “मेरे पूर्वज खोजी थे, जो बहुत समय पहले अपनी छोटी-छोटी लकड़ी की नावों में बड़े से समुद्र को पार कर अमरीका आए थे। यह मुश्किल और ख़तरनाक काम था। पर वे बहुत बहादुर और चतुर थे। उनके लिए कोई समर... समर...,” वह फिर घबरा कर अटक गया था।

“समर्थनात्मक कार्रवाई,” सैण्डी ने सुझाया।

“हाँ,” जोई ने कहा। “मेरे पूर्वजों को समुद्र पार करने में मदद करने के लिए कोई समर्थनात्मक कार्रवाई नहीं थी। वे इतनी दूर अल्पसंख्यक बनने नहीं आए थे।” जोई ने फिर से अपने दोस्तों की ओर देखा। वे उसे घूर रहे थे। जोई को उनकी आँखों में कुछ ऐसा नज़र आया जिसने उसे उसके पूर्वज, हिस्पानी खोजियों जैसा बलवान और साहसी बना डाला।

“मैं अल्पसंख्यक नहीं बनना चाहता,” जोई ने मिसेज़ ग्लास को कहा। मैं अमरीकी बनना चाहता हूँ। एक बेहतरीन अमरीकी। और मुझे किसी नस्ली पत्ते या समर्थनात्मक कार्रवाई की ज़रूरत नहीं है। मैं अपने पूर्वजों की तरह अपने बूते पर कामयाब हो जाऊँगा।”

मिसेज ग्लास की आँखें फैल कर बेसबॉल जितनी बड़ी नज़र आने लगीं थीं।

जोई ने अपनी बात खत्म ही की थी कि लिऑन ने अपना हाथ खड़ा किया।

"हाँ, लिऑन?" मिसेज़ ग्लास ने पूछा।

लिऑन खड़ा हुआ और उसने सीधे मिसेज़ ग्लास को देखा।

"मेरे पूर्वज भी समुद्र पार से अमरीका आए थे," वह बोला। "पर वे गुलाम थे, और उनके पास समर्थनात्मक कार्रवाई का ठीक उल्टा था। बेरहम लोग उन्हें लगातार मारते-पीटते थे। यह सब झेलना मुश्किल और डरावना था। इस अत्याचार से बचना मुश्किल था। सो उन्हें बहुत बहादुर, ताकतवर और चतुर बनना पड़ा। मैं गुलाम नहीं हूँ, न कभी बनूँगा। फिर भी अगर कभी ज़रूरत पड़े तो मेरे अन्दर वह ताकत बरकरार है।"

उसकी भौंहे आपस में जुड़ गई थीं, वह बड़ा ही संजीदा और वयस्क-सा लग रहा था।

"मैं खूब मेहनत से पढ़ूँगा और खूब-खूब सीखूँगा," उसने जोड़ा। "मैं भी अपने दोस्त जोई की ही तरह एक बेहतरीन अमरीकी बनूँगा। और इसके लिए मुझे समर्थनात्मक कार्रवाई की ज़रूरत नहीं होगी।"

मिसेज़ ग्लास की आँखें अब बेसबॉल से भी बड़ी दिखाई दे रही थीं।
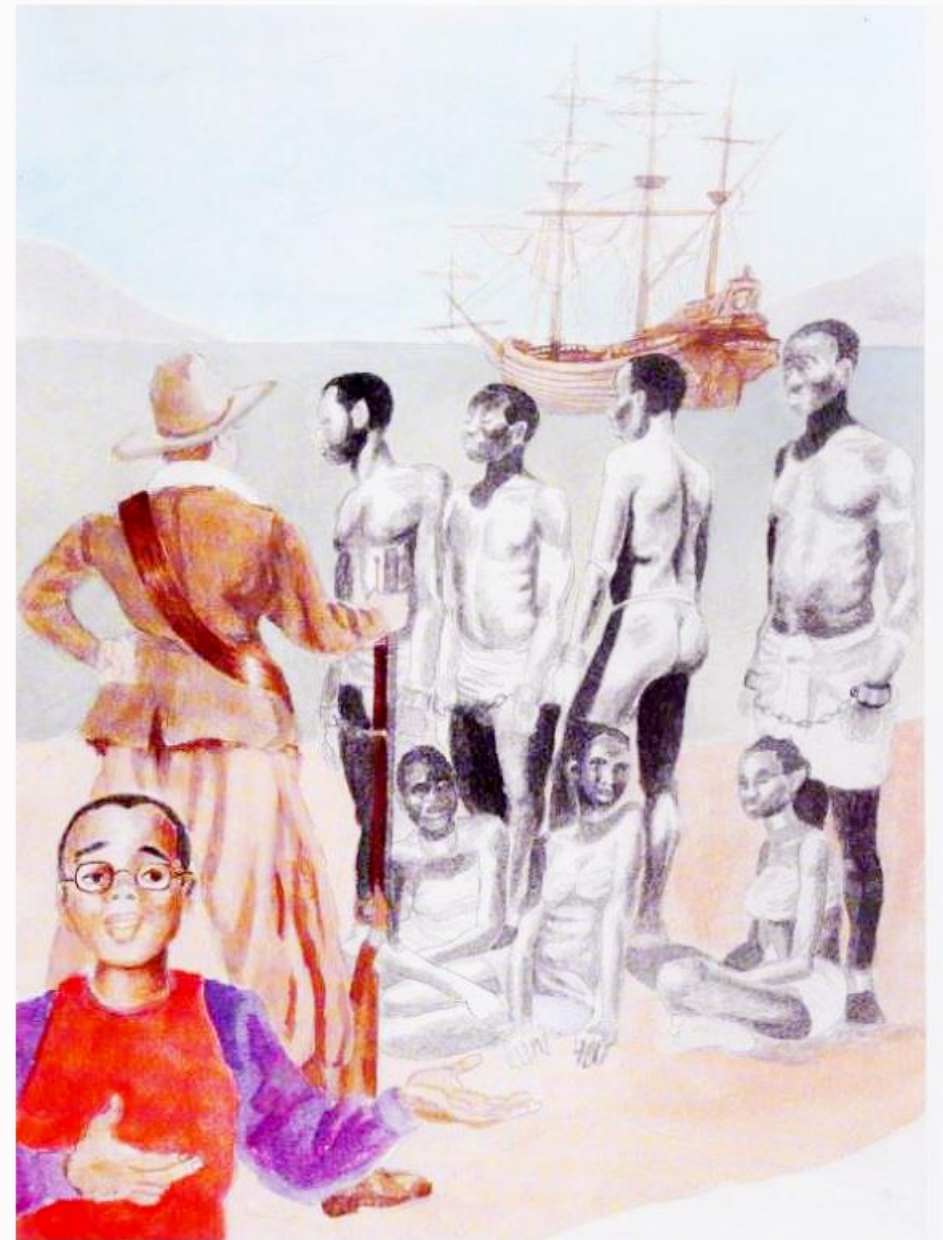
अब सैण्डी ने हाथ ऊपर उठाया।

मिसेज़ ग्लास ने अपना मुँह खोला पर कोई आवाज़ न निकली। उन्हें आवाज़ तलाशने के लिए थूक निगलना पड़ा।

''हाँ, सैण्डी,'' मिसेज़ ग्लास बोलीं।

सैण्डी तन कर खड़ी हुई और उसने मिसेज़ ग्लास की ओर देखा।

''मेरे पूर्वज भी गुलाम थे,'' उसने कहा। ''पर उनमें से कुछ को आज़ाद कर दिया गया था और वे अमरीकी सेना में लड़े थे। वे बफलो सोल्जर्स के नाम से जाने जाते थे। वे बड़े चतुर, ताकतवर और बहादुर थे। मुझे बफलो सोल्जर्स पर बड़ा फ़क्र है।''

सैण्डी की आँखें दमक रही थीं और लग रहा था कि वह रो देने वाली है। ''बफलो सिपाही बेहतरीन अमरीकी थे,'' उसने कहा। ''मैं भी एक बेहतरीन अमरीकी बनूँगी। और यह हासिल करने के लिए मुझे किसी नस्ली पत्ते की ज़रूरत नहीं है।''
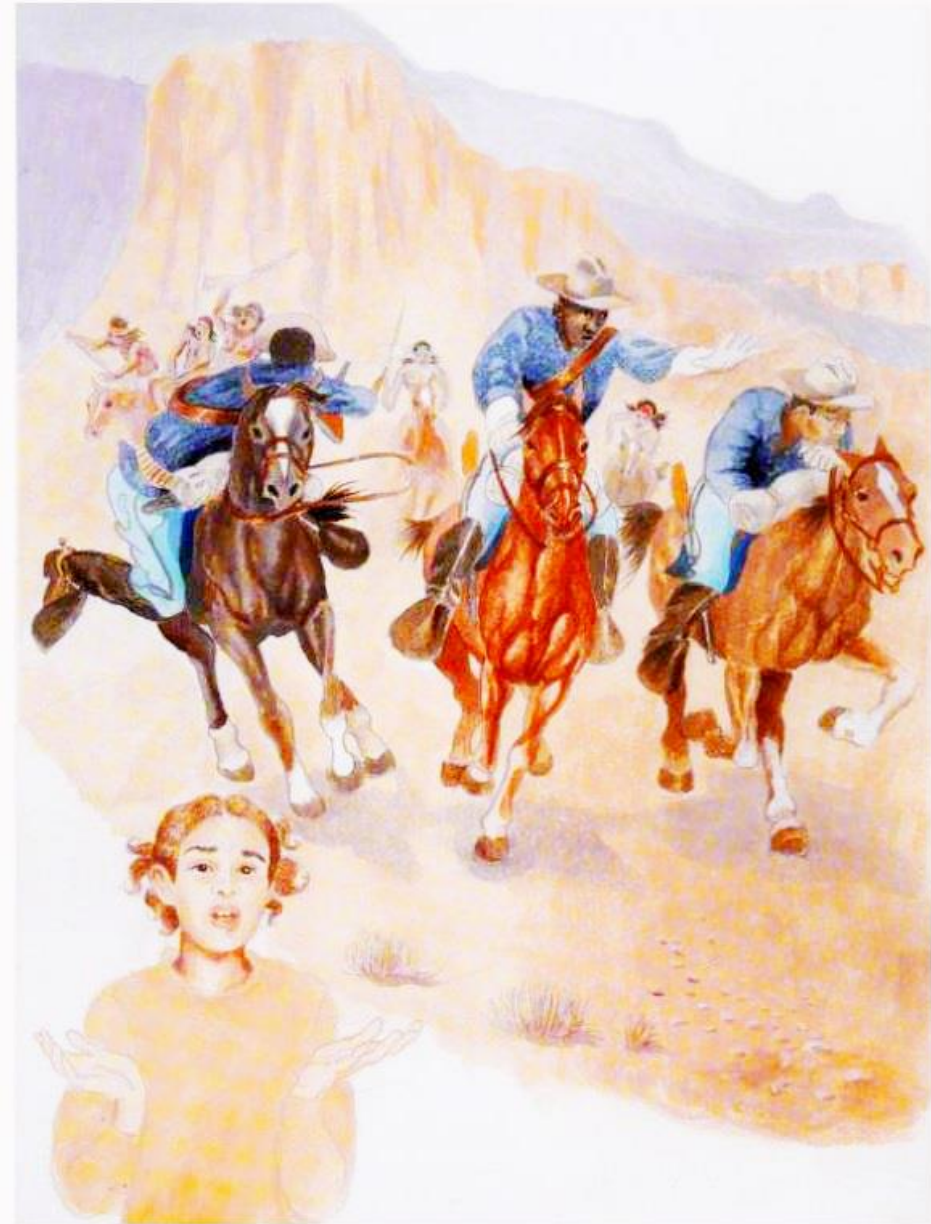
मिसेज़ ग्लास ने अपना मुँह खोला पर गले से कोई लफ्ज़ न निकला। उन्होंने फिर से थूक गिटका, पर इस बार उन्हें अपनी आवाज़ नहीं मिली।

जोई मुस्कुराया। उसे पता चल गया था कि वह और उसके दोस्त बेहतरीन अमरीकी बनने वाले हैं।

''अगर मैं अमरीकी हूँ ही नहीं, तो एक बेहतरीन अमरीकी भला कैसे बन सकता हूँ?''

तीसरी कक्षा का छात्र जोई गौंज़ालस किसी दिन एक बेहतरीन अमरीकी बनने के सपने देखा करता था। यह हासिल करने की उसकी योजना क्या थी? मेहनत से पढ़ना-लिखना और जितना सीखा जा सकता है वह सब सीखना। तब एक दिन उसकी शिक्षिका ने कहा कि जोई दरअसल वह है जिसे 'अल्पसंख्यक कहा जाता है। कि वह इतना चतुर नहीं कि अपने सपने को साकार कर सके। फिर भी 'समर्थनात्मक कार्रवाई' कहलाने वाली चीज़ उसकी मदद कर सकती है।

पर जब जोई अपने हिस्पानी पूर्वजों की ताकत, चतुराई और बहादुरी से प्रेरणा लेता है। वह यह सीख पाता है कि एक अच्छे नागरिक और बेहतरीन अमरीकी बनने की कुंजी है खुद पर नाज़ करना, आत्म-निर्भर बनना और सीखने की ललक बनाए रखना, ना कि खास तरजीह पाना।